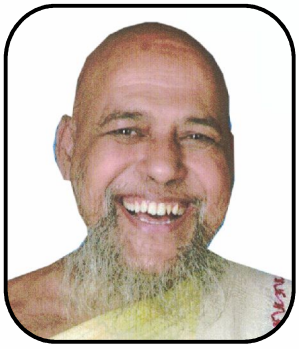

JAINACHARYA SHRI VIJAY NITYANAND SURISHWAR JI MAHARAJ

Jainacharya Shri Vijay Nityanand Surishwar Ji Maharaj is a Jain Monk, who was conferred with the title 'Acharya Shri' at the age of 35. Apart from spreading of principle of Jainism, he is known for his contribution to literary works and social service.

2. Born on 3rd August, 1958, in a Punjabi Jain family in Delhi, Jainacharya Maharaj renounced all worldly possessions at the age of 9 and became a Jain monk along with his family. He studied Sanskrit, Prakrit etc. For 57 years, he has traveled over 2 lakh kilometers on foot, spreading the principles of Jainism across India, from Jammu to Kanyakumari/ Chidambaram and from Kutch to Kolkata/ Cuttack.

3. Jainacharya Maharaj has also established or renovated several educational institutions across India, including the 30+ institutions set up by the Punjab Kesari Acharya Vijay Vallabh Surishwar Ji Maharaj years ago, who had succeeded the sect lineage of Jainachrya Shri Vijyanand Suriji. 110-year-old Shri Mahavir Jain Vidyalaya in Gujarat, which has undergone renovation and expansion; Jain Study Center at Sharda University; Acharya Vijay Vallabh School in Pune; Shri Atma-Vallabh Public School, in Abohar; Shri Atma-Vallabh Jain Kanya Mahavidyalaya in Ganganagar, Rajasthan are such few examples. He has developed several institutions which prominently includes Mahavir Super Specialty Hospital in Lachhwad (Bihar). This is providing free medical services, including microsurgery and eye operations, benefiting over 40,000 people over several years. Offering free education to over 700 students annually, along with computer labs and job assistance has also been a key priority in this region. He has renovated and developed over 400 Jain temples and pilgrimage sites across India. He has also written over 30 books based on his inspiring discourses, contributing significantly to the literary world.

4. Jainacharya Maharaj's peaceful nature, seriousness, and organizational skills have earned him the title of "Shantidoot" (Messenger of Peace). From time to time, in accordance with his work, he has been decorated with many titles like Kalyanak Teerthodwarak, Gyan Ganga Bhagirath, Vikas Visharda, Aman e Masiha, Samanvay Sarathi etc. by various Sangh Samaj. Communities such as Sikhs, Muslims, Gram Panchayats have also regarded him with various appreciation titles on several occasions. Doing great such social services, despite being living a life of strict discipline as Jain saint is regarded quite an uncommon effort.

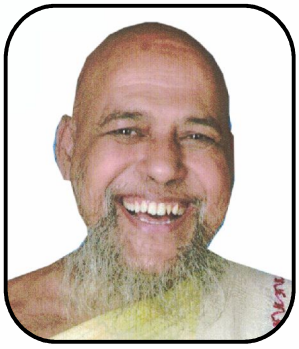

जैनाचार्य श्री विजय नित्यानंद सूरीश्वरजी महाराज

जैनाचार्य श्री विजय नित्यानंद सूरीश्वरजी महाराज एक जैन साधु हैं, जिन्हें 35 वर्ष की आयु में 'आचार्य श्री' की उपाधि से सम्मानित किया गया था। जैन धर्म के सिद्धांतों के प्रसार के अलावा, उन्हें साहित्यिक कार्यों और सामाजिक सेवा में उनके योगदान के लिए जाना जाता है ।

2. 03 अगस्त, 1958 को दिल्ली के एक पंजाबी जैन परिवार में जन्मे, जैनाचार्य महाराज ने 9 वर्ष की आयु में ही सभी सांसारिक सुख–सम्पत्तियों का त्याग कर दिया और अपने परिवार के साथ जैन साधु बन गए। उन्होंने संस्कृत, प्राकृत आदि भाषाओं का अध्ययन किया। 57 वर्षों तक, उन्होंने जम्मू से कन्याकुमारी/चिदंबरम और कच्छ से कोलकाता/कटक तक पूरे भारत में जैन धर्म के सिद्धांतों का प्रचार–प्रसार करते हुए 2 लाख किलोमीटर से अधिक की पैदल यात्रा की है।

3. जैनाचार्य महाराज ने भारत भर में कई शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना या जीर्णोद्धार भी किया है, जिनमें जैनाचार्य श्री विजयानंद सूरि जी के संप्रदाय की वंशावली में उनके उत्तराधिकारी बनने वाले पंजाब केसरी आचार्य विजय वल्लभ सूरीश्वरजी महाराज द्वारा वर्षों पहले स्थापित 30 से अधिक संस्थान शामिल हैं। गुजरात में 110 वर्ष पुराना श्री महावीर जैन विद्यालय, जिसका नवीनीकरण और विस्तार किया गया है; शारदा विश्वविद्यालय में जैन अध्ययन केंद्र; पुणे में आचार्य विजय वल्लभ स्कूल; अबोहर में श्री आत्म–वल्लभ पब्लिक स्कूल; राजस्थान के गंगानगर में स्थित श्री आत्म–वल्लभ जैन कन्या महाविद्यालय ऐसे ही कुछ उदाहरण हैं। उन्होंने कई संस्थान विकसित किए हैं, जिनमें लछवाड़ (बिहार) में स्थित महावीर सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल प्रमुख रूप से शामिल है। यह माइक्रोसर्जरी और आंखों के ऑपरेशन सहित निःशुल्क चिकित्सा सेवाएं प्रदान कर रहा है, जिससे पिछले कई वर्षों में 40,000 से अधिक लोगों को लाभ मिला है। इस क्षेत्र में प्रतिवर्ष 700 से अधिक छात्रों को कंप्यूटर लैब और नौकरी सहायता के साथ मुफ्त शिक्षा प्रदान करना भी एक मुख्य प्राथमिकता रही है। उन्होंने भारत भर में 400 से अधिक जैन मंदिरों और तीर्थ स्थलों का जीर्णोद्धार और विकास किया है, उन्होंने अपने प्रेरक प्रवचनों पर आधारित 30 से अधिक पुस्तकें भी लिखी हैं, जो साहित्य जगत में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं।

4. जैनाचार्य महाराज के शांत स्वभाव, गंभीरता और संगठनात्मक कौशल के कारण उन्हें "शांतिदूत" (शांति के दूत) की उपाधि दी गई है। समय–समय पर, उनके कार्य के अनुसार उन्हें विभिन्न संघ समाज द्वारा कल्याणक तीर्थोद्धारक, ज्ञान गंगा भागीरथ, विकास विशारद, अमन–ए–मसीहा, समन्वय सारथी आदि जैसी कई उपाधियों से अलंकृत किया गया है। सिख, मुस्लिम, ग्राम पंचायत जैसे समुदायों ने भी अनेक अवसरों पर उनको विभिन्न प्रशंसा उपाधियों से सम्मानित किया है। एक जैन संत के रूप में कठोर अनुशासन का जीवन जीते हुए भी ऐसे महान सामाजिक कार्य करना एक असामान्य प्रयास माना जाता है।